

समयसार १३ भी गाथा है. सम्यग्दर्शन कैसे होता है प्रथम, प्रथम धर्मकी शुरुआत तो कहेते हैं के नवतत्त्वका भेदका लक्षसे सम्यग्दर्शन नहीं होता. आहाहाहा ! समझमें आया ? जीषी वात है कभी किया नहीं और यथार्थसे सूननेमें आया नहीं. आहाहा ! नवतत्त्व जो है वो तो भेदरूप है, भेदरूप है तो व्यवहारका विषय हुआ. उसमेंसे भगवान आत्मा शुद्ध चैतन्यधन पूर्णानंद प्रभु अकरूपकी दृष्टि अंतरमें करना उसका नाम सम्यग्दर्शन है. धर्मनी प्रथम सीढी ये है भाए ! आहाहा ! वो नवतत्त्व क्या है ये कहेते हैं पढेले. नवतत्त्व कैसे हुआ है ये प्रथम कहेते हैं. अहीं आया ने ? शुद्धनयसे नवतत्त्वको जाननेसे आत्माकी अनुभूति होती है इस हेतुसे नियम कडा. सूक्ष्म वात है भगवान ! आहाहा !

“विकारी होने योग्य” शब्द है ? क्या कहेते हैं. १३ भी गाथा भीयमें है. छ पंडित पीछे “विकारी होने योग्य” है ? ओ आत्मामें जो शुभभाव होता है, दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा का भाव ये शुभभाव पुण्य भाव, ज्वकी ये पर्याय कहेनेमें आता है. आहाहाहा ! उसके लक्षसे धर्म नहीं ने वो वस्तु धर्म नहीं. आहाहा ! विकारी होने योग्य ओम क्युं कडा ? के शुभभाव अपनी पर्यायमें अपनेसे योग्यतासे उत्पन्न होता है. कर्म तो उसमें निमित्त है. पण विकारी भाव, पुण्यका भाव दया, दान, व्रत, भक्ति आदिका भाव अपनी पर्यायमें योग्यतासे अपने पुरुषार्थसे, उलटा पुरुषार्थसे ओ समयकी उत्पन्न होने योग्य पर्यायसे, ज्वकी भाव पुण्य पर्याय उत्पन्न होती है. आहाहा !

(श्रोता:- ओमां कर्मनी छाया पडे छे ओम कहे छे). ओ बिलकुल वात जूठी है. आहाहा ! कर्मको छूते डी नहीं आत्मा, पण निमित्त कहेनेमें आता है. (श्रोता:- माटे ऐनी छाया पडे छे) छाया झया कुछ है नहीं. दुनिया अज्ञानी गमे ते कहे. दुनियाने (कांछे भबर नथी) आ तो यीज वीतराग सर्वज्ञदेव त्रिलोकनाथ परमात्मा उसकी दिव्य ध्वनि उसका आ सार है. आहाहा !

के ज्वकी पर्यायमें जे समये पर्याय उत्पन्न होने लायक है वो समये पुण्य भाव उत्पन्न होता है, ये पुण्य तत्त्व कडा. ओ अपनी योग्यतासे उत्पन्न होता है. कर्मसे नहीं, कर्म निमित्त कहेनेमें आता है. क्या कडा ये ! आहाहा ! हज्ज तो व्यवहारनी भबर न मणे, तो निश्चय तो कहां आ सम्यग्दर्शन अनंतकाणमें कभी किया नहीं. आहाहा !

तो कहेते हैं ‘विकारी होने योग्य’ अपना शुभभाव और अशुभभाव ये पुण्य ने पाप होने लायक है तो अपनेसे होता है. है ? “दोनों और विकार करनेवाला” जे शुभभाव है ये

अपनी पर्यायमें अपनेसे हुवा. तो पूर्वका कर्म जो है उसको निमित्त कहेनेमें आया है. (श्रोता:- करने लायक नहीं ?) करने लायक कबाने, उसका अर्थ क्या ? के स्वभाव अपना नहीं. त्रिकाण द्रव्य स्वभाव उससे उत्पन्न नहीं होता. तो ये विकार उत्पन्न, अरे संवर कहेते हैं ये भी इच्छ आगण आयेगा, आने दो. बापु मारग जुदा है भाई ! आहाहा ! अरेरे ! ओ मरीने योर्यासीना अवतारमां याहे तो देव हो के याहे तो अबजोपति राजा शेट हो, सब दुःखनी रागाग्निमें सणगते है. “राग आग दाह दहे सदा” छ ढाणामें आता है. आहाहा ! ओ शुभ अने अशुभ राग, “राग आग दाह दहे सदा” आहाहा ! ओ शुभ ने अशुभ राग ओ आग है. अग्नि है. भगवंत् तारी यीज नहीं ओ. आहाहा ! शेट ! आ दूसरी बात यहां आयी है थोड़ी. आहाहाहा ! ओ माटे तो आया है ने अर्द्धिया, उसके घरमें है तो प्रेम बहोत है. बहेन तो आते थे मेरेको भबर नहीं त्यां गये तो महिना रखा. उसके घरमें उतरे थे ना ? अर्द्धी तो बैराव साथे संबंधे नहीं ओणभाषा नहीं भबरेय न होय कोष आते है ने कोष जाते है. आहाहा ! ओक महिना रखा'ता पहेले.

यहां कहेते हैं सून तो सड़ी प्रभु ! आहाहा ! तेरी पर्यायमें जब शुभभाव आता है ये तेरे योग्यतासे आता है. ओ काण कर्ममें ज्यारे दया, दान, व्रत, भक्ति आदिका भाव आता है. ये है ? “विकारी होने योग्य” उसका अर्थ है. भाई आ तो मंत्र है. आ कोई साधारण कथा वार्ता नहीं है. आहाहा !

अपनी पर्यायमें विकारी होने योग्य जे शुभभाव अपनेसे हुवा अपनी योग्यतासे हुवा, उसमें पूर्वका कर्मका उदय है, सूक्ष्म बात है थोड़ी पूर्वका कर्मका उदय त्यां कदाचित् तीव्र भी हो, पण यहां रागकी मंदता जिसने किया, उसने वो कर्मका निमित्त जो है उसको निमित्त ‘करनेवाला’ कहा. क्योकि स्वभाव अपना नहीं. अभी संवरमें भी परका संबंध करनेवाला. आहाहाहा ! भेद है ने ? ये सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! इच्छ वात समजमें न आवे प्रभु, ये कहां जाये केनी कोर, किस तरफ़ जूके. आहाहा ! यहां तो पहेले ‘विकारी होने योग्य’ जे शुभभाव ओ जवकी पर्याय अपनेसे हुई है, छतां उसका लक्षसे सम्यग्दर्शन नहीं होता, उससे नहीं होता है, उसके लक्षसे नहीं होता. ओक वात, “और विकार करनेवाला” पूर्वका जो उदय है उसको यहां शुभभावमें निमित्त कहेकर, करनेवाला कहा है. जीशी वात.

शेट न्यां क्यां भेठे ? अर्द्धी जग्यो आपो जग्यो. पुस्तक है पुस्तक ? समजमें आया ? क्या कहा देवीचंद्र ? (श्रोता:- कर्मका उदय कदाचित् कराता है) नहीं नहीं नहीं नहीं कर्मका उदय तो कदाचित् तीव्र भी हो रागका, पण यहां रागकी मंदता अपने किया अपनी योग्यतासे, तो ये पूर्वका कर्मका उदयको निमित्त करनेवाला कहेनेमें आया.

अरेरे ! है ? आ तो महा सिद्धांत है प्रभुका ! आ तो सर्वज्ञदेव त्रिलोकनाथ ! आहाहा ! उसकी वाणी है, कुंदकुंदाचार्य भगवान पास गये थे आठ दिन रहे थे त्यां हवे ऐनी य यहां शंका करे छे भाई के महाविदेहमां गया न इता. अरे प्रभु तने भबर नहीं. पंथास्तिकाय टीकामें पाठ है कुंदकुंदाचार्य गये थे महाविदेहमें और दर्शनसारमें पाठ है देवसेन आचार्यका दर्शनसार ओक शास्त्र है के अरे ! कुंदकुंदाचार्य महाविदेहमें जाकर ऐसी यीज न लाते तो हम मुनिपणुं कैसे

पाते ? आहाहा ! मुनि कहेते है दर्शनसार पुस्तक तो इजरो शास्त्र इजरो पुस्तक है. पंथास्तिकाय कइने ? वो तो जयसेन आचार्यकी टीकामें पहेले कइ जयसेन आचार्यकी टीकामें अैसा कइ की मइविदेइमें गये थे भगवान कुंडकुंदाचार्य नग्न मुनि द्विगंबर छत्रस्थ, आहा ! और त्यां जाकर, यहां शिवकुमार राजकुमारने माटे समयसार बनाया है, अैसा पाठ संस्कृत है, जयसेन आचार्यकी टीका. जयचंद्र ! जयसेन आचार्य, और दर्शनसार नामका अेक पुस्तक है सिद्धांत है.

यहां तो इजरो शास्त्र देण्या है ने ! अहीं तो अठार वर्षकी उंमरसे इमारे तो आ तो ८८ हुवा ८० यलते है. भरेभर तो गर्भना सवा नव महिना गिने तो तो ८० पुरा हो गया. लोको तो जनमसे गिनते है नै ? जनमसे, पण माताना पेटमां सवा नव महिना आया भगवान उसको भी कहेते है, अे आयुष्य यहांका है. समजमें आया ? यहां तो समय समयकी बात है भगवान ! यहां तो भोंतेर वर्षसे यलते है. इम तो दुकान पर, घरकी दुकान थी त्यां इम तो आ ज वांयते थे. आ नहीं, द्विगंबर नहीं थे, इम तो श्वेतांबर थे ने ! स्थानकवासी थे. समजमें आया ? अे वांयते थे, दुकान घरकी थी, दुकान भी यलाते थे, दुकान उपर ज्यारे इमारा भागीदार बेठे है तो इम शास्त्र वांयते थे अंदर, ये नहीं तो इमारे दुकान उपर बेसना पडे थडे, छोटी उंमरकी बात है १७ वर्षसे २२ वर्ष तक ५ वर्ष. ५ वर्ष दुकान यलाछ थी पापकी. पण छतां पण हुं तो शास्त्र वांयतो तो. उसमें भी शास्त्र वांयते थे हो, देभो. लोको अे कोछ नहीं ये तो भशगूल धंधामां पण इम तो ये शास्त्रसे तो छतना ७२ वर्ष हुवा. आहाहा. आ द्विगंबर शास्त्र ७८ से वांयते है, अठयोतेर-५६ वर्ष हुवा.

अहींया प्रभु अेम कहेते है. आहाहाहा ! सून तो सडी अेक वार के “विकारी होने योग्य” जे शुभभाव ‘होने योग्य’ क्युं कइ ? के ते समये ते जनम उत्पत्तिका काण है शुभभावकी उत्पत्तिका काण है तो शुभभाव उत्पन्न हुवा है, अे अेक बात और विकारी होने योग्य पाप, दो बात यहां है. शुभ अशुभभाव अे अशुभभाव होता है पाप बिंसा जूहुं योरी विषय भोग वासना काम कोध, आ पैसा कमाना, ध्यान रभना व्याज उपजाना, व्यापार धंधाका भाव ये सब पाप अशुभभाव है. ये अशुभ भी विकारी होने योग्य था. अे समयमें ये उत्पत्तिका काण था. आहाहाहाहा ! समजमें आया ? आंही तो बताना है कि नवतत्त्व है ये सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आहाहा !

सम्यग्दर्शन जिसको प्राप्त करना है धर्मकी पहेली सीढी तो उसको ये नवतत्त्वका भेदको जानना, जान करके अभंडानंद, आहा ! यैतन्य भगवान पूर्णानंद प्रभु, अेकरूप स्वरूप उसकी दृष्टि करनेसे सम्यग्दर्शन होता है. आहाहाहा ! आची वात छे भाछ ! धर्मनी पहेली इछ शरुआत. यारित्र ने विशेष स्थिरता ने तप ओ तो दूसरी कोछ आधी यीज है. यहां कहेते है कि विकारी होने योग्य दो, शुभ ने अशुभ. दोछ विकारी होने योग्य था. और विकार करनेवाला पूर्वका कर्मका उदयको निमित्त कइो ये पुण्यभावका करनेवाला निमित्तसे कइ, वो पाप भावका करनेवाला निमित्तसे कइ. आहाहा ! समजमें आया ? “दोनो पुण्य है ने दोनो पाप है” है ? दोनो पुण्य है ने दोनो पाप है. कोण दो ? के छवमें पुण्य योग्य भाव जो शुभ हुवा वो छवकी पर्याय है, और निमित्त जो है ये अछवकी पर्याय है, दोनों पुण्य है ने दोनों पाप है. आहाहा !

समजमें आया ?

शुभभाव जो हुवा ओ भाव पुण्य है शुभ, और निमित्त जो है ओ द्रव्य पुण्य है कर्म, दोनों मिलकर दोनों ही पुण्य कहा है. दोनों ही पुण्य है, और दोनों ही पाप है. अपनेमें अशुद्धकी योग्यतासे जो पाप भाव हुवा ओ अपनेसे जन्म उत्पत्ति काण हुवा तो हुवा. उसमें पूर्वका कर्मका उदय है उसको निमित्तसे पाप कहेनेमें आता है. तो दोही पुण्य ने पाप है. जवकी पर्याय भी पुण्य पाप है, और अजवकी पर्याय भी पुण्य पाप है. इज तो आ तो व्यवहार इज आ तो धर्मय नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! ओ बात हुँ. दोनों पाप है. है ? आया, 'दोनों' समजे ? जो भाव पुण्य हुवा ने भाव पाप, उसमें जो निमित्त है द्रव्य उदय तो आ ने आ दोनों ही पुण्य है ने दोनों ही पाप है. आहाहा !

तीसरी बात "आस्रव होने योग्य" टीकाका तीसरा बोल, ये पुण्य पाप ओ मिलकरके आस्रव है. नया कर्म आनेका कारण है. आहाहाहा ! आस्रव होने योग्य, शुभ अशुभभाव अपनी पर्यायमें वो समयमें जन्मक्षणके कारण उत्पत्तिका काण है तो अपनी योग्यतासे पुण्यपापका भाव आस्रव उत्पन्न होता है. आहाहाहा ! शरतुं बहु आकरी बापा ! जीशुं समजवा, वाशियाने ओलुं व्याज काढवुं होय यकवती तो काढे. यकवती व्याज समजते है ? एस लाभ रुपिया दिया है कोँको आठ आना. पहेले तो आठ आना था ने ? इवे तो अक टको दोढ टको होता है. तो एस लाभ दिया हुआ हो तो अक दिनका एस लाभ का आठ आना ने ? पहेले आठ आना था. व्याज यढाकर एस लाभ उपर अक दिनका व्याज यढाकर दूसरे दिन व्याज सहितका व्याज यढाकर, एसे यकवती व्याज कहेते है. बारे मासका मुद्दल व्याज सहित पहेले एस लाभ. पीछे दूसरे दिन एस लाभ उपर उसका जो व्याज आया वो मिलाकर उसके पीछे पाछा उसको मिलाकर, आहाहा ! ओ वाशिया ओम यकवती व्याज निकालते है. (श्रोता:- ओ आगणना वाशिया) इवेना वाशीया तो अत्यारे ठीक छे. आ तो पहेलेकी बात है. समजमें आया ? आंही कहेते है कि ओ व्याज करता आ दूसरी कोँ यीज है. आहाहा ! अपनी पर्यायमें शुभ अशुभभाव होने योग्य शब्द लिया है, ये क्युं ? क्या कारण ? के ओ समये वो जन्म उत्पत्तिका काण है शुभाशुभका भाव तो उत्पन्न हुवा. वो जवकी पर्याय हुँ. और उसमें पूर्वका कर्म निमित्त है ओ अजवकी पर्याय हुँ. ओ निमित्तको यहां करनेवाला कहा, अने विकारको यहां योग्यतावाला अपनी जवकी पर्यायको कहा. आवी वातुं छे भाँ. है ?

आस्रव होने योग्य, आहाहा ! ओ क्युं कहा ? के कोँ कर्मसे यहां आस्रव हुवा है औसा नहीं. यहां अपनी पर्यायमें अपनी पुरुषार्थकी उँधाँसे, आहाहाहाहा ! ओ शुभ ने अशुभभाव होने योग्य अपनेसे हुवा है. "और आस्रव करनेवाला" पूर्वका उदयको आस्रव करनेवाला कहा. "दो ही आस्रव है" समजमें आया ? शुभ अशुभभाव ओ आस्रव, और निमित्त जो कर्म है वो भी आस्रव. अक जवकी पर्याय अक अजवकी पर्याय. पर्याय है. आ तो नवतत्त्व इज सिद्ध करते है. आ नवतत्त्वमें आत्मा भिन्न है. औसी नवतत्त्वकी पर्यायसे, आहाहाहाहा ! भगवान अंदर यैतन्यमूर्ति प्रभु अक है. नवतत्त्वकी पर्यायसे भगवान अंदर भिन्न है ! है ?

(श्रोता:- भगवान नित्य क्या कार्य करता है ?) काँ करते नहीं. औसाने औसा है

अनादिसे. अनादिसे ज्ञायक है अे अैसा है. अे कांछ करते नहीं ने अे कांछ छोडते नहीं. वो पर्यायमें आता नहीं. सूक्ष्म बात है प्रभु ! जैन दर्शन समजना वीतराग धर्म वो अलौकिक बात है. याहे जैसा भी तीव्र मिथ्यात्व भाव हो. निगोदमें जानेकी लायकात अे मिथ्यात्व समय भी ज्ञायकभाव तो शुद्ध त्रिकाण अेकरूप ही पडा है. आहाहाहा ! अने याहे तो केवलज्ञान हो, अे केवलज्ञानकी पर्यायके काणमें भी ज्ञायक तो पूर्ण शुद्ध है ही है. अेमां घट वध कुछ कुछ नहीं. आहाहा !

(श्रोता:- ज्ञायक कुछ करते नहीं ?) ज्ञायक कुछ करते नहीं. कर्तव्य तो पर्यायमें है. ज्ञायक तो ज्ञायक ही त्रिकाण आनंदकंद प्रभु ध्रुव ध्रुव ध्रुव, आहाहा ! ये सम्यग्दर्शन का विषय, ये तो कायम अेकरूप रहेते है. अे माटे तो आ नवकी बात करते है. आहाहा ! समजमें आया ? इच्छ तो नव समजमें न आवे उसको सम्यग्दर्शनका विषय अभेद कहांसे आवे ? अे तो रज्जु मरवाना छे. आहाहा ! समजमें आया ? आहा ! बापु ! देह छूटी ने आंभो बंध थछ जशे. यात्यो जशे नई ने निगोद. त्यां कोछ अवतार ज्यां आत्माका ज्ञान न किया, सम्यग्दर्शन न किया, आहाहाहा... अे योर्यासीना अवतार अज्ञाण्या द्रव्य ने अज्ञाण्या क्षेत्र, अज्ञाण्या काण, अज्ञाण्या भव, अज्ञाण्या भाव त्यां यले जायेगा, आहाहा ! भाछ न्यां कोछ सझारस काम न करेगी.

आंही कहेते है कि अेक वार सून तो सही नवतत्त्वकी योग्यता कैसे है. अे भी सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. तो पहेले जज्ञाते है नव. आहाहा !

आस्रव करने योग्य होने योग्य, आस्रव करनेवाला दोनो आस्रव. वो कर्मका उदय है अे भी द्रव्य आस्रव नया आते है अे नहीं. जीष्णी वात है, यहां शुभ अशुभभाव हुवा वो नया कर्म आते है ये यहां नहीं. यहां तो पुराणा कर्म जो है जे अही पुण्यपापका भाव हुवा उसमें पुराणा कर्म निमित्त कहेनेमें आया है, उसको द्रव्य आस्रव कहेते है, अने पर्यायको भाव आस्रव कहेते है. आहाहा ! समजमें आया ?

भाछ वीतराग मारग ! आहाहा ! छन्द्रो जेने सूनने जाते है जेने बत्रीस लाभ वैमान शकेन्द्र है, सुधर्म देवलोकका छन्द्र-बत्रीस लाभ तो वैमान. अेक वैमानमें असंभ्य देव है. अैसा बत्रीस लाभ वैमान. अनो स्वामी शकेन्द्र है. अभी तीन ज्ञानका धणी है. मति, श्रुत, अवधि. और शास्त्रमें सिद्धांतमें अे लेभ है के ओ जव अैसा है के मनुष्य होकर मोक्ष जायेगा. अेक भवतारी है. अभी छन्द्र है सुधर्म देवलोकमें अे सूननेको आते है भगवान पास तो अे वाणी कैसी होगी ? आहाहा ! आ दया पाणो ने व्रत पाणो ने इवे अे तो कुंभारेय कहेते है. समजमें आया ?

जे तीन ज्ञानका धणी अेक भवतारी और उसकी पत्नि भी अेक भवतारी इजारो छन्द्राणी है ने अेमां अेक मुष्य छन्द्राणी है. अेक भवमें मोक्ष जानेवाली. अे भी त्यां समकित्ती है, तीन ज्ञान है. न्यांसे मनुष्य होकर मोक्ष जानेवाला है दो ही. अे भगवान पास जाते है सूननेको महाविदेहमें, आंही था तो आंही आते थे, भगवान यहां थे तो यहां आते थे. आहाहाहा ! आंही तो अैसा कहेना है के अैसा छन्द्र जैसा अेकावतारी अेक भवतारी ये सूननेको आते तीन

ज्ञानका धणी समझिती ज्ञानी, आहाहा ! ये सूनने आते है प्रभु ओ वाणी कैसी डोगी ? आहाहा ! आंही तो साधारण इज्ज वाणी समजने लायक नहीं, जाने नहीं. आहाहा ! ओ छन्द सरभा पण ओ वात सूनने भगवान पासे जाते थे, यहां भगवान होता था तो यहां आते थे. आहाहा ! ओ यहां कहेते है की इज्ज तो नवतत्त्वका भेद को दिभाते है छातां नवतत्त्वका भेद ओ सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आहाहाहा ! समजमें आया ?

पीछे “संवररूप होने योग्य” है ? संवररूप होने योग्य ओ क्या कहा ? अपनी पर्यायमें शुद्धताकी प्रगट होनेकी लायकात अपनी पर्यायमें हुँ, अपनी योग्यतासे संवर नाम धर्मकी पर्याय अपने काणमें उत्पन्न होनेके लायकसे संवर पर्याय उत्पन्न हुँ, धर्म पर्याय. आहाहाहा ! वो भी पर्याय है. उसका लक्षसे सम्यग्दर्शन होता है औसा नहीं. आहाहाहा ! आवी वात छे भाछ ! संवर है ये दो प्रकारका है. ओक आत्मामें शुद्धि निर्मण अनंत काणमें प्रगट नहीं हुवा, औसी दशा प्रगट हुँ ओ भाव संवर, और पूर्वका कर्मका उदय छतना उदय आया नहीं छसका नाम द्रव्य संवर, दोहीको संवर कहेनेमें आता है. ओक भाव संवर ओक द्रव्य संवर. दोही भेद है. आहाहा ! ओ दोही के लक्षसे, ओ पर्याय है तो उसका लक्षसे सम्यग्दर्शन नहीं होता. हुवा है उसको भी उसके आश्रयसे सम्यग्दर्शन नहीं टीकता. क्या कहा ? संवर होने योग्य तो धर्म तो हुवा है, पण उसके आश्रयसे समझित टीकता नहीं. आहाहाहा ! उत्पन्न होता तो नहीं पण उसके आश्रयसे, उत्पन्न तो हुवा है धर्म. सम्यग्दर्शन हुवा है. ज्ञान संवररूप दशा तो हुँ है. पण उसके आश्रयसे सम्यग्दर्शन उत्पन्न तो पहेले हुवा अपने स्व के आश्रयसे पण आ संवर के आश्रयसे इवे सम्यग्दर्शन टीक सकता है, औसा नहीं है. ओ तो द्रव्यके आश्रयसे सम्यग्दर्शन होता है. होता है, टीकता है, वृद्धि पामता है वो त्रिकाणी द्रव्यके आश्रयसे. आहाहाहा ! आवी वात ! नवराश क्यां छे ?

ओलुं कहुं तुं ने जापानी ओक माणस है ने बडा, बडा शोधक है. इउ वर्षकी उंमर और १७ वर्षका अेना लउका. बडोत शोध किया कि जैन धर्म, क्या ? के ‘अनुभूति’ ओ जैन धर्म. छीक पण पीछे उसने औसा कहा के आ जैन धर्म वाशियाको मिला है, ने वाशिया व्यवसायमें घूस गया है. जापानीओ, व्यापार कडो के व्यवसाय कडो के अधर्म कडो सब ओक ही है. जापानी माणस है बडा शोधक. बडोत शोधक, इज्जरो शास्त्रो शोधकर ओक संस्था स्थापी है जापानमें, जापानमें औसा शोध करके उसने यहां आया है छापा है. छापा है ने कल दिया है. तो उसने निकाला के “आत्मानुभूति” ओ जैन धर्म है, और आत्मा निर्वाण स्वरूप है औसा निकाला है उसने. क्या कहा ? समजमें आया ?

आत्मा जो है त्रिकाणी स्वरूप उसका अनुभव करना उसका आश्रयसे अनुभव करना, वीतरागी दशा प्रगट करना, सम्यग्दर्शन प्रगट करना वो अनुभूति ओ धर्म है. वो कहेते है और आत्मा क्या है, जैन धर्म कहेते है के आत्मा निर्वाण स्वरूप है. आहाहा ! आपणे अहीं कहे छे, ‘मुक्त स्वरूप’ है. मुक्त स्वरूप ही आत्मा अंदर है. आत्मा रागके संबंधसे बंधा हुवा, आत्मामें बंध नहीं हुवा है. आहाहाहाहा ! ओ तो पर्यायमें रागका संबंधसे बंध है. द्रव्य जो वस्तु है ये तो मुक्त स्वरूप अंदर है. आहा ! आवी वात इवे. ओ ओम कहेते है, पीछे लिखा

के अरे वाशियाने हाथ आ जैन धर्म आया ने वाशियानो व्यवसायमें घूस गया है. व्यापार ने धंधा ने आहाहा ! अेमां आ जैन धर्म क्या है, प्रगट करनेका अवसर नहीं मिलता उसको, आहाहा !

(श्रोता:- त्त्यारे व्यापार करना के नहीं ?) कोण व्यापार कर सकते है ? राग कर सकते है, यहां क्कहाने ? व्यापारकी क्रिया आत्मा कर सकते है ? पैसा देना, लेना ? आ भेतीका काम पंडितको है ने कृषि पंडित, वो कर सकते है आत्मा ? (श्रोता:- पैसा तो लछ शके छे.) है ? पैसा आते है आत्माके पास ? पैसा तो जड है. भगवान तो अरूपी यैतन्य है तो उसके पास पैसा आता है ? (श्रोता:- सर्वशक्तिमान छे ने आत्मा) सर्वशक्तिमान तो जड उपर शक्तिमान छे अैसा क्कहा ? जडका शक्तिमान है अैसा शक्तिमान है ? अैसा है नहीं. आहाहाहा ! अेक अंगूलि यला सकते तीन कालमें आत्मा त्रण कालमें नहीं. अंगूलि यलती है अे आत्मासे यलती है, अे तीन काल तीन लोकमें नहीं. क्योकि अे जडकी अण्वकी पर्याय है. अे अण्वकी पर्याय अण्वके काणमें अपना जन्मक्षणके कारणे उत्पत्ति के काणमें अैसा उत्पन्न होता है, आत्मासे नहीं. आहाहा ! अेक वात.

दूसरी बात. भगवान आत्मा स्व द्रव्य जो है अे अण्वको कभी छूता नहीं, क्या क्कहा ? (श्रोता:- अण्वको छूता नहीं) भगवान आत्मा जो अरूपी यैतन्यधन है ये कभी शरीरको छूता नहीं, कर्मको छूता नहीं, अंगूलिको छूता नहीं. आहाहा ! आ हार जो होता है उसको कभी आत्मा छूता नहीं, पाणी आता है उसमें आत्मा छूते नहीं. आहाहा ! तुम क्या क्कहते है आ ? है ? आ दुनिया बीज छे जैन परमेश्वरनी. डाढाढाछ ! आ जज अमारा बैछ है. जज है ने बडा जज है अमदावादमां हवे छूट्टी हो गछ, रज्ज हो गछ निवृत्ति है. आहाहा ! व्याभ्यानमें सब जज आते थे हमारे अमदावादमें जाते है तो बधा आते है. बडा बडा वकील ने जज ने, पण आ यीज पहेली समजनेमें मिलता नहीं. आहाहा !

यहां क्कहते है के संवर होने योग्य तो आत्मा है. अपनी पर्यायमें धर्मकी दशा सम्यग्दर्शन ज्ञान यारित्रकी दशा अपनी योग्यतासे अपने काणमें उत्पन्न होनेके लायक अपनेसे उत्पन्न होता है, संवर कोछ रागके कारणसे उत्पन्न होता है. व्यवहार राग क्रिया ने रागके कारणसे संवर हुवा अैसी यीज नहीं. इज्ज तो नवतत्त्वका भेद समजाते है. आहाहाहा ! समजमें आया ? “संवर होने योग्य” ज्जव संवार्य अेम क्कहा संस्कृतमें है “और संवर करनेवाला संवारक” पूर्वका उदय छतना न उदय आया उसको निमित्तरूपे संवर क्कहनेमें आता है. आहाहाहा !

हवे, “निर्जरा” “निर्जरा होने योग्य” क्या क्कहते है हवे ? आत्मामें जो संवर-शुद्धि उत्पन्न हुछ अे पर्याय है, पण पीछे विशेष शुद्धिका उत्पन्न होना ये निर्जरा है. आहाहा ! भाषा दीठ भाव डेर. संवर जो सम्यग्दर्शन ज्ञान यारित्र जो आत्माके अवलंबनसे उत्पन्न हुवा, ये शुद्ध है, और निर्जरा है ये शुद्धिकी विशेष वृद्धि है, तो ये शुद्धिकी जे विशेष वृद्धि अपने कारणसे उत्पन्न हुछ है. आहा ! कोछ अपवास क्रिया ने अैसा क्रिया माटे निर्जरा हुछ, अैसा है नहीं. अपवास आदि करनेमें तो शुभ राग है, वो कोछ निर्जरा नहीं ने धर्म नहीं. आहाहाहाहा !

(श्रोता:- अपवाससे निर्जरा नहीं होती ?) अपवास ये सब, है, उपवास तो छसको

કહેતે હૈ ઉપ...વાસ શુદ્ધ ચૈતન્યઘન પ્રભુ 'ઉપ' નામ સમીપમે જાકર વસના ટીકના અંદરમે ઉસકો ઉપવાસ કહેતે હૈ. ઐસા ભાન બિનાકા આ લંઘન કરતે હૈ. એક દો ને તીન પાંચ દશ અપવાસ ને પચાસ અપવાસ ને એ સબ અપ વાસ હૈ, ઉપ વાસ નહીં. 'અપ' નામ માઠા વાસ, ભૂંડા રાગના વાસમે પડા હૈ વો. આહાહાહા !

(શ્રોતા:- બધાનો અર્થ ફરી જાય છે.) બધાનો અર્થ ફરી જાય છે ભાઈ. ભગવાન ! આહાહાહા ! ત્રિલોકનાથ પરમાત્મા મહાવિદેહમે તો શ્રીમુખે યે કહે રહે હૈ. આહાહા ! સમજમે આયા ? અરે મુનુષ્યપણા આયા, ઉસમે આ વાત સમજમે ન આવે તો મનુષ્યપણા મિલા ન મિલા હૈ. આહા ! એ તો ઢોરકો પશુકો નહીં મિલા હૈ ને આને મિલા હૈ. પણ જો આ વસ્તુ સમજમે ન આયા, તો મિલા ન મિલા હો જાયેગા, જાયેગા નરક ને નિગોદકા અનંત ભવમે ચલે જાયેગા ભાઈ, અહીં કહે છે, નિર્જરા હોનેકે યોગ્ય, એટલે કે અશુદ્ધિકા નાશ હોને યોગ્ય ઔર શુદ્ધિકી ઉત્પત્તિ હોને યોગ્ય, એ ભાવ નિર્જરા, એ શુદ્ધ જીવકી પર્યાય હૈ. ગાથા ઐસી આ ગઈ, આ બરાબર હૈ. (શ્રોતા:- આજ તો બહોત મજા આઈ) જિજ્ઞાસુ હૈ ને ભગવાન. આહાહા !

એ આત્મા અંદર આનંદકંદ પ્રભુ ઉસકે આશ્રયસે શુદ્ધિકી વૃદ્ધિ જો હુઈ ઉસકા નામ નિર્જરા. નિર્જરાના તીન પ્રકાર. એક શુદ્ધિકી વૃદ્ધિ હો એ નિર્જરા, એક અશુદ્ધિકા નાશ હો એ નિર્જરા ઔર વો યહાં અશુદ્ધિકા નાશ હુવા તો ત્યાં કર્મકા ઈતના ઉદય ભી નહીં આતા હૈ, નાશ હોતા હૈ એ દ્રવ્ય નિર્જરા. હજી તો નવતત્ત્વકી બાત ચલતી હૈ હજી તો. આહાહાહા ! સમજમે આયા ? ભાઈ નથી આવ્યા હમારે જીવરાજજી ? શરીરને ઠીક નહીં હોય. નથી આવ્યા ? બ્લડ પ્રેશર રજપ થઈ ગયું. શું કહેવાય એ બ્લડ પ્રેશર રજપ જીવરાજજીને છે ઘણા વખતથી રહ્યા કરે છે, બ્લડ પ્રેશર. જડની પર્યાય હૈ ભાઈ. આહાહા ! બ્લડ પ્રેશર હો કે ક્ષય રોગ હો કે કેન્સર હો. એ તો જડની પર્યાય હૈ. માટી ઘૂળકી ભગવાનમે એ હૈ નહીં. આહાહાહા ! ભગવાન શબ્દે આ આત્મા રોગકો છૂતે હી નહીં કભી તીન કાલમે. અરે ઈસકો છૂતે તો નહીં. પણ જ્ઞાયકભાવ ભગવાન સચ્ચિદાનંદ પ્રભુ દ્રવ્ય સ્વભાવ વો રાગકો છૂતે નહીં. આહાહાહા ! રાગકો છૂતે નહીં, પણ ધર્મકી પર્યાય જો ઉત્પન્ન હોતી હૈ ઉસકો દ્રવ્ય છૂતે નહીં. આવો મારગ છે બાપા ! અરેરે ! સમજમે આયા ? દ્રવ્ય જો જ્ઞાયક સ્વરૂપ હૈ એ તો ત્રિકાળ એકરૂપ રહેનેવાલી ચીજ હૈ. એ પર્યાયમે આતી નહીં. આ તો પર્યાયકા ભેદકી વ્યાખ્યા કરતે હૈ અભી તો. આહાહા !

નિર્જરા હોને યોગ્ય ઔર નિર્જરા કરનેવાલા એટલે જૂના કર્મ ખિર ગયા વો નિર્જરા કરનેવાલા કહેનેમે આયા હૈ. "દોનો નિર્જરા હૈ" એક અજીવકી પર્યાય એક જીવકી પર્યાય. દોનો નિર્જરા હૈ.

"બંધને યોગ્ય" આત્મા વિકારકી પર્યાયમે બંધને યોગ્ય અપને કારણસે, આહાહાહા ! રાગ પુણ્ય પાપકા ભાવસે બંધને યોગ્ય વિકારસે બંધને યોગ્ય એ અપની યોગ્યતાસે બંધને યોગ્ય હોતા હૈ કોઈ કર્મકે કારણસે બંધને યોગ્ય ભાવ હોતા હૈ ઐસા હૈ નહીં. આહાહાહાહા ! બંધને યોગ્ય એ જીવકી પર્યાય. બંધન કરનેવાલા એ જૂના કર્મ, નયાની યહાં બાત નહીં. પુરાના કર્મ નિમિત્ત હૈ એ બંધને કરનેવાલાકો, દ્રવ્યબંધ કહા. અજીવકી પર્યાય કહા. આ ભાવ બંધ હૈ એ જીવકી પર્યાય હૈ. આહાહાહા ! હજી તો નવતત્ત્વ સમજાતે હૈ. બંધ હૈ દોનો.

“मोक्ष होने योग्य” हवे आभिरकी छेल्ली. आहाहाहा ! भगवान आत्मामें केवणज्ञानमें सिद्धपद होने योग्यके काणमें मोक्ष पर्याय होती है. आहाहा ! अपना स्वकाणमें मोक्ष होनेके समयमें अपना निज क्षणमें उत्पत्ति मोक्षकी पर्यायका काण था तो उसमें मोक्ष दशा उत्पन्न हुई. ओ मोक्ष दशा ओ जवकी पर्याय है. आहाहाहा ! पर्याय है, ओ द्रव्य नहीं. आहाहाहा ! मोक्ष होने योग्य जे केवणज्ञान उत्पन्न हुवा ओ जव द्रव्य नहीं पर्याय है. आहाहाहा ! और ओ समये कर्मका छूट जाना ओ द्रव्य मोक्ष है, आ भाव मोक्ष है, वो कर्म छूट जाना वो द्रव्य मोक्ष है. ओक जवकी पर्याय है, ओक अजवकी पर्याय है. आहाहा ! बहुं जीषुं बापु ! आहाहा ! ज्ञानने केणववुं पडे भाए ! आहाहा !

वो आटा होता है ने आटा, लोट लोट बनाते है ने कांछ रोटली तरत करते है ? ये आटाको केणवते है औसा. औसे ज्ञानमें पहेली आ भात केणवनी पडेगी प्रभु ! आहा ! ज्ञानने लायकको ज्ञानना पडेगा तेरे. आहाहा ! अरे ! मोक्ष होने योग्य, होने योग्य क्युं कहा ? के ओ समयमें केवणज्ञानकी उत्पत्ति होने योग्य अपनी पर्यायमें लायकातसे उत्पन्न हुई है. कोछ कर्म क्षय हुवा तो मोक्षकी पर्याय उत्पन्न हुई है औसा नहीं. आहाहा ! क्या कहेते हैं ?

(श्रोता:- शुद्ध द्रव्य कहा है ?) नहीं नहीं. आ तो पर्यायकी भात है. पर्याय वो है ओ शुद्ध द्रव्य नहीं. यहां तो नव पर्यायसे भिन्न द्रव्य है उसकी दृष्टि करनेसे सम्यग्दर्शन होता है ओ भताना है. जीषी भात है.

ओ भात तो सूननेमें कठण पडती है अत्मी, बहारमें कहे औसे के व्रत करो, भक्ति करो, पूजा करो, मंदिर बनावो, गजरथ काढो, रथ निकालो. कोण करे ? ओ तो जडकी पर्याय परकी क्रिया है छसमें तेरा भाव कदाचित् मंद हो रागकी मंदता हो तो ये पुण्य है, वो कोछ धर्म नहीं.

(श्रोता:- धर्म आप किसको कहेते हो ?) हैं ! आ कहेते है ने, के आ नवतत्त्वकी पर्याय जो है, ओक जवकी और ओक अजवकी, दोको छोडकर दोका नवतत्त्वका पर्यायका भेदको छोडकर, त्रिकाणी अखंडानंद प्रभु जे शुद्ध है, जो पर्यायमें कल्पी आया नहीं, कल्पी मलिन हुवा नहीं, कल्पी केवणज्ञानकी पर्यायमें ली आत्मा आता नहीं, आवी वात है. आहाहा ! (श्रोता: पण आवुं अमारा देशमां संभणातुं नथी) पण ओमने आवो टाछम होय आवुं मनुष्यपणुं बापु ! अत्यारे नहीं करे तो के दि' करशे, भाए ! आ मनुष्यपणुं तो विभाए जशे. भाए ! आंणो भींरीने याल्यो जशे, रभडतो, जव. ये पवन होता है ने वंटोणिया पवन नहीं होता ? वंटोणिया कहेते है क्या कहेते है ? उसमें तीनका होता है तीनका, उडके कहां जायेगा ? आहाहा ! औसे जिसको अत्मी सम्यग्दर्शन नहीं मिथ्याश्रद्धामें पडा है ओ उडकर तीनका कहां जायेगा, भाए ! आहाहा !

अर्धीया बडा यकवतीं ब्रह्मदत्त ८६००० स्त्री, ८६ कोऽ पायदण, १६००० देव सेवा करते थे. पण मिथ्यात्वका पाप सेवन करते थे, आम डीराना पलंग उपर पोढे थे, छसकी ओक स्त्रीको तो हजार देव सेवा करते थे, देव सेवा करते थे स्त्रीका. औसी तो ८६००० स्त्री आ आंण भींरी प्रभु, ओ पलंगमेंसे दूसरे समये सातमी नरकमें गये. आहाहाहा ! जेना ओक क्षणनी वेदना प्रभु, करोडो जल अने करोडो भवसे कही शके नहीं औसी वेदनामें गये. ओक क्षण नहीं, पण

तेत्रीस सागर अेक सागरोपममें दस कोडाकोडी पल्योपम, अेक पल्योपममें असंख्य भागमां असंख्य अबज वर्ष. आहाहाहा ! भाए अेवा दुःख तें अनंतवार सहन कर्या है, अनंतबैर नरकमें गये है अनंतबैर निगोदमें गये है. प्रभु तेरे भबर नहीं. भूल गया माटे नहीं था अैसे केम कहे ? आहाहा ! समजमें आया ? जनम पीछे छ मासमें क्या हुवा अे भबर है अत्मी ? भबर नहीं माटे नहीं था, अेम कोश कहे ? अेम अनंत कालमें दुःख सहन किया अे भबर नहीं है तो नहीं था अैसा कोश कहे, समजमें आया ? लोञिकसे न्यायसे समजना पडेगा के नहीं ? आहाहा ! तो तेरी जनम मरझकी दुःखनी दशा, भगवान पोकार करते है, प्रभु अे दुःखने क्या कहा है ? तें दुःख तो सहन किया, पण दुःख तेरा दुःख देभनेवालाकी आंसु धारा चलती थी. आहा ! अे दुःख मिटानेका रस्ता, आहाहा ! नवतत्त्वकी दृष्टि छोडकर क्योकि नवतत्त्व अे पर्यायका भेद है. आहाहाहा ! पर्यायका लक्ष छोडकर, आहाहाहा ! समजमें आया ?

“भोक्ष डोने योग्य तथा भोक्ष करनेवाला दोनों भोक्ष है.” आहाहा ! “क्योकि अेकको ही अपने आप पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, भोक्ष नहीं होता,” क्या कहेते है ? अेकीला प्रभु ज्ञायकभाव उसमें आ भेदभाव नहीं होता. निमित्त-निमित्त संबंधने कारणे अे भेदभाव होता है. अेकीला ज्ञायकभाव उसमें आ भेद नव नहीं होता. अपनी पर्यायकी योग्यता अने निमित्त दूसरी यीज, दोके कारणसे अे नव भेद उत्पन्न होता है. आहाहाहा ! समजमें आया ? क्योकि अेकको ही अपने आप, अपने कारणसे पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध सिद्धि नहीं होती. अेकीला ज्ञायकभावमें नवभेद कैसे आया ? उसकी पर्याय और निमित्त दो मिलकर नवभेद हुअे है. आहाहा ! है ! आहाहाहा !

अे दोनों जव ने अजव है, कोश दो ? जो जवकी पर्याय है अे जव कहेनेमें आता है अने उदय जो अजव है उसको अजव कहेनेमें आता है. दो मिलकर जव-अजव है. आहाहाहा ! समजमें आया ? वे दोनों जव अजव है, अर्थात् वो दोनोमेंसे, दोमें से अेक जव है ने दूसरा अजव है, आहाहा ! अे पुण्य पाप आस्रव संवर निर्जरा बंध ने भोक्ष अे जवकी पर्याय है, अने उदय जो है कर्मका अे अजवकी पर्याय है निमित्त, दो मिलकर यहां नवभेद हुवा है, अेकीला आत्मामें नवभेद होता नहीं. आहाहा ! आ..हा !

इवे दूसरी यीज, वो तो नव सिद्ध किया, वो सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आहाहाहाहा ! इज तो धर्मकी पहेली सीढी छसका आ विषय नहीं नव. आहाहा ! आ देव गुरु ने शास्त्र तो पर रह गया. वो भी सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आहाहाहा ! धर्मकी पहेली सीढी उत्पन्न होनेमें त्रिकाणी ज्ञायकभाव ही अेक आश्रय करने लायक है बस ! आहाहाहा ! सूक्ष्म तो है पण वस्तु अैसी है. आहाहा ! इवे अे कहेते है.

“बाह्य दृष्टिसे देखा जाय” क्या कहेते हैं ? स्थूण दृष्टिसे देखा जाय तो जव पुद्गलकी अनादि बंध पर्यायके समीप जाकर, आहाहा ! जवकी पर्याय ने अजवकी पर्याय दोनों के समीप जाकर “अेकरूपसे अनुभव करने पर नवतत्त्व भूतार्थ है”. नव है. आहाहा ! नवप्रकारकी पर्याय है, असत्य है जूठा है अैसा नहीं. आहाहाहाहा ! समजमें आया ? जव पुद्गलकी अनादि बंधपर्यायके समीप जाकर अेकरूपसे अनुभव करने पर नव भूतार्थ है. नव पर्याय है.

नव भेद है. ओक ज्व द्रव्यके स्वभावके समीप जाकर अनुभव करनेसे नवतत्त्व अभूतार्थ है. आहाहा ! क्या कहा ? आहाहा ! ओक स्वरूप भगवान आत्मा, उसकी समीप जाकर ओकत्वका अनुभव करनेसे, ये नव अभूतार्थ जूठा है. आहाहाहा ! डाह्लाभाह ! आ वात है भाह. कोह ह्यि' सांभणी नथी, बेसे तो क्यांथी ? आहाहाहा ! अम ने अम जिंदगी बझममां ने बझममां, बझम नाम भान विना जिंदगी निकाली जाती है. आहाहा !

यहां कहेते है के ज्व अने जउ दोका भेदसे विचार करनेसे नव है, नव है, और ओक ज्वद्रव्यके स्वभाव, भगवान पूर्णानंद प्रभु ध्रुव स्वभाव, नित्य स्वभाव, सामान्य स्वभाव, ओकरूप स्वभाव, आहाहाहा ! उसकी समीप जाकर, ओकरूप स्वभावकी समीप जाकर, है ? अनुभव करने पर अभूतार्थ है. नव वात सायी है नही, पर्याय स्वभाव असत्यार्थ है, है ?

(श्रोता:- समीप कैसे जाना ?) कहेते है ने अंदर ओ तरङ्गका भेदका लक्ष छोडकर अभेदमें जाना. जीणी वात बापु ! आहाहा ! आ तो अनंत काणमां ओक सेकन्ड क्रिया नही कभी. राग आग दाह दहे बणी गयो छे मरी गयो छे ओमां. आहाहाहा ! विकल्पनी जाणमां बणी गयो छे, मरी गयो छे, भान नथी अने. मैं क्या यीज हुं अंदर ? आनंदका नाथ ज्ञायकभावसे बिराजमान प्रभु ! आहाहा ! उसको रागकी अग्निमें बाण (सुलग) दिया. आहाहा ! ओ बणता नही, रागसे बण गया तो उसको ज्ञायकभाव नही है ओसा हुवा. क्या कहा ?

रागकी पर्यायमें ओकाकारसे जल उठा तो उसको ज्ञायकभाव है नही तो उसके माटे ज्ञायक तो मर गया है. आहाहा ! यहां तो त्यां लग कहेते है. 'पुरुषार्थ सिद्धि उपाय' अमृतयंद्रायार्थ संतो तो हिंगंबर है सभ. ओ परकी दया पाणनेका भाव आया ओ राग है. ओ स्वरूपकी हिंसा है. वीतराग स्वरूप भगवान आत्मा ज्ञायक कायमकी यीज है उसमें वो राग विकृत दशा हुह ओ स्वरूपकी हिंसा हुह. अपना स्वरूपका निषेध हुवा. रागका अस्तित्व प्रसिद्धमें आया.

(श्रोता:- इसमें हिंसा कहां हुह ?) राग हुआ उसका क्या अर्थ हुआ, रागकी हैयाती देभनेमें त्रिकाणकी हैयाती छूट गह. दृष्टिमेंसे छूट गया. आहाहा ! आकरी भात भाह ! ओकरूप वस्तुमेंसे निकलकर विकल्प आया है. याहे तो... धर्मका, आहाहा ! ये अपना स्वरूपका आश्रय न लिया ने रागका आश्रय लिया तो स्वरूपकी हिंसा हुह. आहाहाहा !

विशेष कहेगा. (श्रोता:- प्रमाश वचन गुरुदेव).